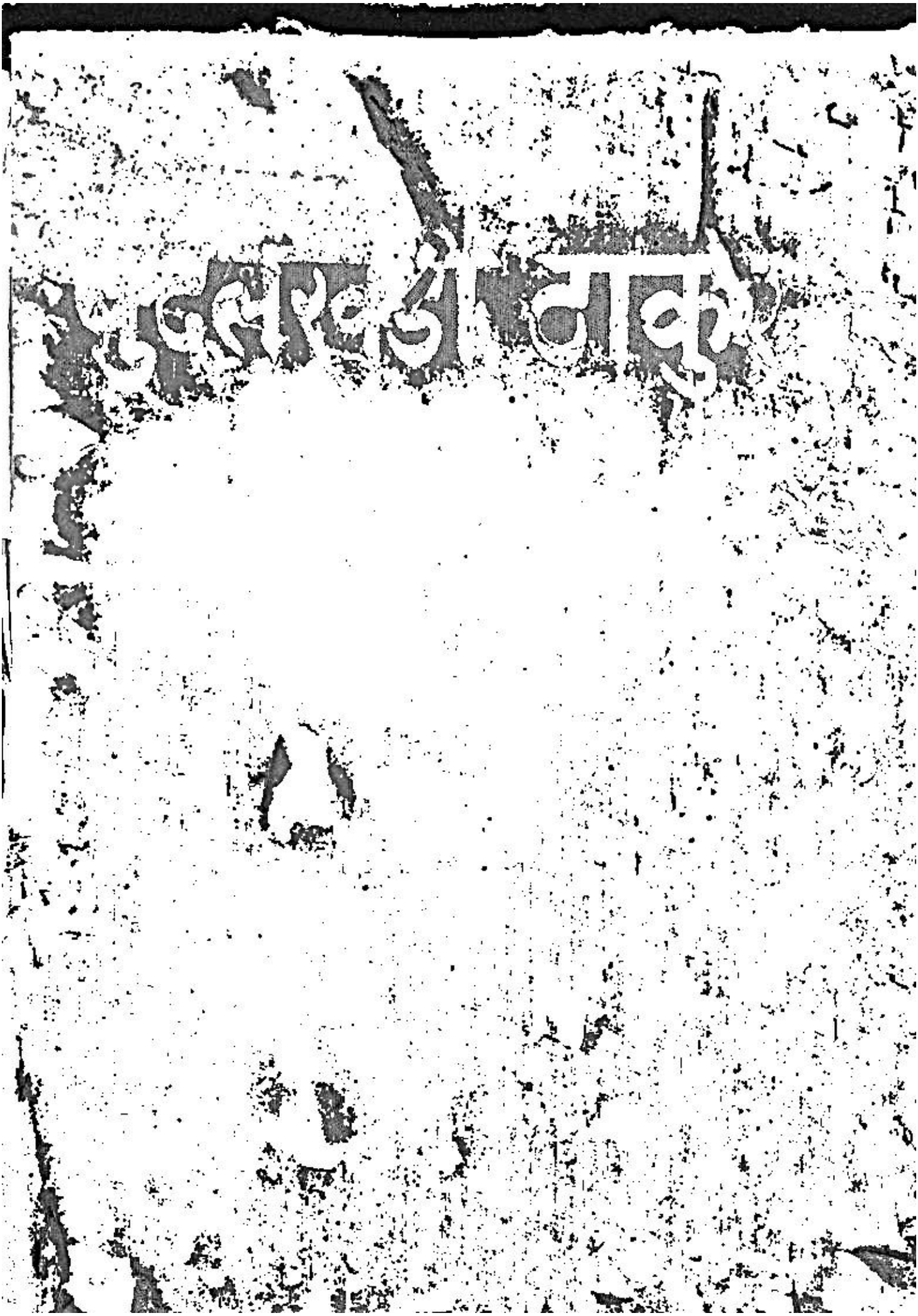

बुन्देलखण्ड - नाटक

(जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

• लेखक

राम नारायण पाण्डेय

भूमिका

महाकवि कालिदास ने अपने 'कुमार सम्भव' के पांचवें सर्ग के पहले श्लोक में कहा है -- 'प्रियेषु सौभाग्य फला हि चारुता ।' नारी का सौन्दर्य वही है जो अपने प्रिय को प्रसन्न कर सके । कविता का भी सौन्दर्य ऐसा ही होता है । कविता का प्रियतम उसका पाठक होता है । कविता उस समय धन्य हो जाती है जबकि उसके यथार्थ रूप को पहचानने वाला उसे मिल जाता है । कविता कवि के भाव-विह्वल हृदय से उत्पन्न होती है और पाठक के हृदय को रस-सिक्त करती है । इस प्रकार उसका सम्बन्ध एक ओर कवि से है दूसरी ओर पाठक से । सहृदय पाठक के अभाव में कविता की वही दशा होती है, जो एकान्त अरण्य के पुष्पित कुसुम की होती है । यद्यपि घ्राण तृप्ति के सौभाग्य से वंचित रहने पर भी वह कुसुम कुसुम ही है । किन्तु, क्या ही अच्छा होता, यदि वह कुसुम किसी सुबाला के केशों में उलझ कर अपने को धन्य कर लेता । गोस्वामी जी ने कविता की इसी वृत्ति की ओर संकेत करते हुए कहा है --

'मनि मानिक मुकुता छवि जैसी ।
अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ।।
नृप किरीट तरुनी तनु पाई ।
लहहिं सकल सोभा अधिकाई ।।
तैसेहिं सुकवि कवित बुध कहहीं ।
उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं ।।'

मणि माणिक्य और मुक्ता की छवि अहि गिरि और गज को उतना छविमान नहीं करती है जितना कि नृपकिरीट और तरुणी तनु को । इसी प्रसंग में संस्कृत का एक श्लोक याद हो आया --

'कवि करोति काव्यानि स्वादु जानन्ति पण्डिताः ।
सुन्दर्या अपि लावण्यं पतिर्जानाति नो पिता ।।'

सुन्दरी के लावण्य को पति जानता है पिता नहीं । यह उक्ति कवि, कविता और पाठक के सच्चे सम्बन्धों को स्पष्ट कर रही है ।

काव्य परख की इसी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप साहित्य में आलोचना का जन्म हुआ । आलोचना सहृदय पाठक की ओर से किसी काव्य के मर्म की व्याख्या

है । दुःख की बात है कि हम कभी-कभी किसी काव्य के मर्म को पहचानने में विलंब करते हैं । रीतिकाल के रीतिमुक्त कवियों का भी मूल्यांकन कार्य कुछ विलंब से प्रारंभ हुआ। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं--घनानन्द । यदि हिन्दी के उत्कृष्ट विरह काव्यों की गिनती की जाय तो कालक्रम से जायसी के बाद घनानन्द का ही काव्य होगा। घनानन्द के मूल्यांकन का श्रेय आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल को है, इस क्षेत्र में दूसरा उल्लेख्य प्रयास पं०विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का है। आशा है कि इसी प्रकार अन्य रीतिमुक्त कवियों का मूल्यांकन होगा और वे हिन्दी साहित्य में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकेंगे ।

रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रधान कवि हैं --घनानन्द,बोधा, आलम और बुन्देलखण्डी ठाकुर । यही बुन्देलखण्डी ठाकुर इस प्रबन्ध के प्रतिपाद्य हैं । इनकी कविताओं के दो संग्रह अभी तक प्राप्त हैं --एक है 'ठाकुर शतक' और दूसरा है 'ठाकुर ठसक' । स्व० लालाभगवान दीन कृत परवर्ती संग्रह-विशेष प्रामाणिक एवं शुद्ध है। यद्यपि इसमें भी कुछ दोष हैं । इसमें भूमिका में जो छन्द दूसरे ठाकुर कवियों के बतलाए गए हैं उनको बुन्देलखण्डी ठाकुर की कविताओं के रूप में मूल पाठ में रख लिया गया है । लेकिन जबतक कोई दूसरा विशुद्ध संग्रह नहीं प्राप्त है तब तक बुन्देलखण्डी ठाकुर की कविताओं का मूल्यांकन 'ठाकुर ठसक' के ही ही आधार पर करना पड़ेगा। ठाकुर की कविताओं के मूल्यांकन का यह मेरा बाल प्रयास है । बाल प्रयास में अपूर्णता देखकर यदि बड़े लोग प्रसन्न नहीं होते हैं तो रुष्ट भी नहीं होते। ठाकुर का जीवन-चरित , उनका व्यक्तित्व, उनकी काव्य में कल्पना, उनके काव्य भाषा की विशेषताएं, भावों की दृष्टि से कविता का विश्लेषण, प्रकृति चित्रण, युग संस्कृति रीतिमुक्त कवियों में ठाकुर का स्थान --यही इस प्रबन्ध की प्रमुख बातें हैं ।

इस प्रबन्ध को लिखते हुए स्व० लाला भगवानदीन , आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल , पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डा० रामकुमार वर्मा, पं० परशुराम चतुर्वेदी , डा० नगेन्द्र , पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं० गोपीनाथ तिवारी प्रभृति विद्वानों के विचारों का उपयोग मैंने यथास्थान किया है । इसलिए मैं उनका आभारी हूं । 'बुन्देलखण्डी ठाकुर' पर प्रबन्ध प्रस्तुत करने की स्वीकृति देकर हमारे अध्यक्ष माननीय डा० गोपीनाथ तिवारी ने हमें उपकृत किया है । ठाकुर का काव्य संग्रह 'ठाकुर ठसक' हमारे इस शहर के किसी पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं हुआ । यह पुस्तक हमें डा० भगवती प्रसाद सिंह के 'निजी पुस्तकालय' से प्राप्त हुई । इसके लिए हम डाक्टर साहब

के कृतज्ञ हैं । हमारे निदेशक डा० देवर्षि सनाढ्य ने अपने मूल्यवान सुझाव समय-समय पर देकर निदेशक के धर्म का पालन किया है । रीतिकाल के विद्वान् पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने मेरे प्रश्नों के उत्तर देते हुए अपने पत्रों द्वारा मुझे उपकृत किया है । मेरा यह बाल प्रयास आपके सम्मुख है । बाल प्रयास का मूल्यांकन ही क्या हो । लेकिन होता ही है उसकी सीमाओं को देखकर ।

विद्वानों का अनुचरानुचर --
इस प्रबन्ध का लेखक ।

बुन्देलखण्डी ठाकुर

विषय-क्रम

		पृष्ठ
प्रथम प्रकरण	रीतिकाल और ठाकुर	१ - १०
	(क) नामकरण	१
	(ख) अवधि निर्धारण	३
	(ग) काव्य प्रवृत्तियां	४
	(घ) स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा और ठाकुर	७
द्वितीय प्रकरण	जीवन, व्यक्तित्व एवं काव्य ग्रंथ	११ - ३४
	(क) ठाकुर नाम के एकाधिक कवि	११
	(ख) जीवन चरित	१२
	(ग) वंशवृक्ष	१४
	(घ) काव्य में व्यक्तित्व-एक प्रश्न	१४
	(ङ०) ठाकुर का व्यक्तित्व	२३
	(च) काव्य ग्रन्थ	३०
तृतीय प्रकरण	भावपक्ष	३५ - ६३
	(क) रस तत्व	३५
	(ख) शृंगार रस ही आदि रस	३७
	(ग) शृंगार रस का विश्लेषण	३८
	(घ) शृंगार रस का रस-राजत्व	४४
	(ङ०) ठाकुर का शृंगार वर्णन	४६
	(च) भक्ति भावना	६१
चतुर्थ प्रकरण	कल्पना विधान	६४ - ७५
	(क) कल्पना की सृजन प्रक्रिया	६४
	(ख) कल्पना विधान का प्रयोजन	६६
	(ग) कल्पना का रूप	६७
	(घ) कल्पित चित्र के अवयवों में समानुपात	६८
	(ङ०) कल्पना और भारतीय साहित्यशास्त्र	६९
	(च) कल्पना और भाव	७१
	(छ) ठाकुर के काव्य में कल्पना-विधान	७३

		पृष्ठ
पंचम प्रकरण	प्रकृति एवं त्योहार वर्णन	७६ - ८६
	(क) काव्य और प्रकृति वर्णन	७६
	(ख) काव्य में प्रकृति वर्णन का रूप	७८
	(ग) रीतिकालीन प्रकृति वर्णन	८१
	(घ) ठाकुर का प्रकृति वर्णन	८४
	(ङ०) त्योहार वर्णन	८७
षष्ठ प्रकरण	विचारधारा	९० - ९६
	(क) काव्य और विचार	९०
	(ख) जीवन सम्बन्धी आदर्श	९१
	(ग) काव्य सम्बन्धी आदर्श	९२
	(घ) काव्यालोचन	९३
	(ङ०) युग संस्कृति	९३
सप्तम प्रकरण	कला पक्ष	९७ - ११०
	(क) भाषा	९७
	(ख) भाषा में चित्रात्मकता	९९
	(ग) भाषा में प्रकृति	१०१
	(घ) लोकोक्ति विधान	१०२
	(ङ०) शब्दालंकारों का प्रयोग	१०४
	(च) लाक्षणिक प्रयोग	१०५
	(छ) भाषा की रसानुकूलता	१०६
	(ज) शब्दों का साभिप्राय प्रयोग	१०७
	(झ) छंद विधान	१०९
अष्टम प्रकरण	ठाकुर और अन्य रीतिमुक्त कवि	१११ - १२७
	(क) प्रेम का आदर्श	१११
	(ख) नायिका भेद एवं नखशिख निरूपण	११८
	(ग) शृंगार निरूपण	१२०
	(घ) मूल्यांकन	१२४
परिशिष्ट	प्रमुख सहायक ग्रंथ	१२६ - १३०